Q→ बौद्ध के पंचमहाव्रत की चर्चा करें ?

Ans→ सम्यक चरित्र के लिए पाँच महाव्रतों का पालन आवश्यक है, जो इस प्रकार है :—

(i) अहिंसा — जैन साधना के पंच महाव्रतों में अहिंसा का प्रथम स्थान है। जैन दर्शन में यह महाव्रत सम्पूर्ण आचार संहिता में शामिल है। अहिंसा से तात्पर्य है—मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों से होनेवाली हिंसा का परित्याग। जैन धर्म में अहिंसा से तात्पर्य मात्र दूसरों को कष्ट पहुँचाने से बचना ही नहीं, बल्कि उनके उपकार में सचेष्ट रहना भी है। यदि व्यक्ति उपकार करने की योग्यता रखता है फिर भी वह ऐसा नहीं करता तो यह भी हिंसा है। जैन दार्शनिक संन्यासियों से कठोरतापूर्वक अहिंसा के पालन की अपेक्षा करते हैं।

(ii) सत्य — सत्य से आशय है असत्य का परित्याग व सत्यवादिता से तात्पर्य है प्रिय एवं सत्य वचन का पालन करना। असत्य कटुवचन का पालन भी अनुचित है। सत्य वचन का पालन करने के लिए

व्यक्ति को निडर, लोभरहित एवं परनिन्दा से बचना चाहिए।

(iii) अस्तेय — अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना। इस व्रत को लेने पर बिना किसी दूसरे की अनुमति के वस्तु नही लेनी चाहिए। जैन दर्शन अस्तेय अर्थात् चोरी करने को बुरा मानता है। चोरी करके व्यक्ति दूसरे के धन का अपहरण करता है। पराई वस्तु को चुपचाप ग्रहण करना भी अस्तेय कहलाता है।

(iv) अपरिग्रह — अपरिग्रह का तात्पर्य है त्याग करना। यह व्रत व्यक्ति को वस्तुओं के अनावश्यक संग्रह एवं लोभ को रोकता है। जैन दर्शन के अनुसार मुमुक्षु को शब्द, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श इत्यादि विषयों का परित्याग करना चाहिए। जैन संयासी भिक्षापात्र को भी अपना नही कह सकता। महावीर स्वामी ने अपरिग्रह पर बहुत जोर दिया है। उन्होंने वस्त्रों तक को त्यागने की भी बात कही है, क्योंकि वस्त्रों का संग्रह भी परिग्रह है। वस्तुओं के संग्रह से भी लोभ होता है। अपरिग्रह के अन्तर्गत वस्तुओं के त्याग के

साथ-साथ ममत्व भाव का भी त्याग है। सच्चा अपरिग्रह वस्तुओं का पूर्णतः त्याग है।

(v) ब्रह्मचर्य —— जैन दर्शन में समस्त प्रकार की वासनाओं का त्याग ब्रह्मचर्य कहलाता है। इसके पालन से इन्द्रियाँ नियन्त्रित रहती हैं। व्यक्ति कई प्रकार की कुप्रवृत्तियों से बच जाता है। ब्रह्मचर्य सभी प्रकार की कामनाओं का परित्याग है।

इस प्रकार त्रिरत्नों का पालन करने से 'संवर' हो जाता है। 'संवर' की प्रक्रिया सम्पन्न हो जाने से नए कर्म पुद्गलों का जीव में निर्माण नहीं होता, परन्तु इस प्रक्रिया से पूर्व जो पुद्गल जीव में प्रवेश कर चुके थे तथा जिनमें कर्म-पुद्गलों का निर्माण हो चुका था तथा जो अभी भी जीव को जकड़े थे, मुक्ति प्राप्ति करने के लिए इनका समूल नाश आवश्यक है।